आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सहज हृदयोद्गार –

द्रव्य की प्रभुता का क्या कहना !

आत्मामें एक सर्वज्ञत्वशक्ति है। सर्वज्ञत्वशक्ति कहो, सर्वज्ञत्वगुण कहो या सर्वज्ञस्वभाव कहो, सत् आत्मा का सत्त्व सर्वज्ञत्व है। प्रभु ! बात सूक्ष्म लगे, परन्तु घबराना नहीं। तुझे ऐसा लगना चाहिये कि मेरी पर्याय की इतनी प्रभुता तो द्रव्य और गुण की प्रभुताका तो क्या कहना ! यह विचारना चाहिये, मनन और रटन करना चाहिये। एक यही करना है। एक पर्याय की इतनी शक्ति ! फिर भी लोग कहते हैं – निमित्त बिना नहीं होता। बात सच्ची है, परन्तु निमित्तके कारण पर्याय होती है – ऐसा नहीं है। उस समय निमित्त होता है, पर निमित्त की पर्याय निमित्त में और उपादान की पर्याय उपादान में निमित्त की पर्याय में भी अनंत समृद्धि है और उपादान की पर्याय में भी अनंत समृद्धि है।

कितनों ने तो पूरी जिंदगी में भी ऐसी बात सुनी तक नहीं। तत्त्व में जैसा-जैसा गहरा उतरता जाता है, वैसा-वैसा अलौकिक रूपसे उसका पता लगता है। प्रत्येक द्रव्य की पर्याय की ऐसी समृद्धि ! जिसकी एक-एक पर्याय की ऐसी समृद्धि तो ऐसी अनंत पर्याय के बिना तो कोई द्रव्य कभी भी नहीं होता। पर्याय की तो एक समय की स्थिति है उसकी इतनी महत्ता ! तो यह द्रव्य तो त्रिकाली भगवान है, आत्मा की ध्रुव सत्ता है – कितनी ही बार ऐसा विचार आने से नींद उड़ जाती है।

अपनी पर्याय की ऐसी रिद्धि जाने तो अतंर में अपने में अपने द्रव्य की रिद्धि जानने का प्रयत्न करे। गुरु के निमित्त से होता है ऐसा कहा जाता है, परन्तु अपने से हो, तब गुरु को निमित्त कहा जाता है। उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य सत् के अंश हैं। और सत् को किसी की अपेक्षा नहीं हो सकती। जिसे अपनी इतनी समृद्धि का अंतर में लक्ष आये, वह उसका घोलन करके अंदर की समृद्धि को देखने जाता है। द्रव्यस्वभाव तो शाश्वत है, यह उत्पाद-व्यय तो एक क्षण की पर्याय है। एक क्षण की पर्याय की रिद्धि इतनी तो द्रव्यकी ऋद्धि कितनी ? ऐसा इसके द्रव्यस्वभाव का माहात्म्य आना चाहिये। माहात्म्य लाकर अंदर में प्रयत्न करना चाहिये।

पर्याय के बिना द्रव्य तीन काल में नहीं हाता। पर्याय की इतनी रिद्धि तो द्रव्य की जो रिद्धि उसकी महिमा का क्या कहना ? प्रथम अनूमान में भी ऐसे निर्णय का प्रयत्न करना चाहिये। एक-एक पर्याय, ऐसी-ऐसी, तो अनंत पर्याय प्रगट है, प्रत्येक द्रव्य की पर्याय प्रगट है। सामान्य विशेष बिना हो ही नहीं सकता। **– रात्रिकालीन चर्चा, दिनांक 23-9-1980**

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 28 313 अंक : 1

अब मेरे समकित सावन आयो

अब मेरे समकित सावन आयो।।टेक।।
बीति कुरीति मिथ्यामति ग्रीषम, पावस सहज सुहायो।
अब मेरे समकित सावन आयो।।1।।

अनुभव-दामिनी दमकन लागी, सुरति घटा घन छायो।
बोले विमल विवेक पपीहा, सुमति सुहागिन भायो।।
अब मेरे समकित सावन आयो।।2।।

गुरु धुनि गरज सुनत सुख उपजे, मोर सुमन विहंसायो।
साधक भाव अंकुर उठे बहु, जित तित हरष सवायो।।
अब मेरे समकित सावन आयो।।3।।

भूल धूल कहिं मूल न सूझत, समरस जल भर लायो।
भूधर को निकसे अब बाहिर, जिन निरचू घर पायो।।
अब मेरे समकित सावन आयो।।4।।

ह्न कविवर पण्डित भूधरदासजी

छहढाला प्रवचन

निर्जरा और मोक्ष तत्त्व संबंधी भूल

रोके न चाह निजशक्ति खोय, शिवरूप निराकुलता न जोय।
याही प्रतीति जुत कछुक ज्ञान, सो दुःखदायक अज्ञान जान।।७।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

मोक्ष के कारणरूप निर्जरा सम्यग्दृष्टि को ही होती है; अकामनिर्जरा तो अज्ञानी के भी होती है, यहाँ उसकी बात नहीं है। ज्ञान और इच्छा भिन्न है; इच्छा तो आत्मशांति से विरुद्ध है, उसमें आकुलता है। जिसने शुभराग को मोक्ष का साधन माना उसने आकुल भाव के द्वारा मोक्ष होना माना; अतः उसका मोक्ष भी आकुलतारूप ही ठहरा; निराकुलता सुखरूप मोक्ष की उसे पहचान नहीं है। मोक्ष तो संपूर्ण निराकुलतारूप है, निराकुलता का कारण भी तो निराकुल भाव ही होता है, आकुलता कभी निराकुलता का कारण नहीं होती। शुभ इच्छा में भी आकुलता है, उसको यदि मोक्ष का कारण माना जाय तो कारण-कार्य में विपरीतता हो जाती है ह्न ऐसी विपरीत श्रद्धा व विपरीत ज्ञान जीव को दुःख का कारण होता है; अतः उसका त्याग करना चाहिए अर्थात् राग को मोक्ष का साधन नहीं समझना चाहिए।

अरे जीव ! तू अपने चैतन्यवैभव को भूल गया, इसीलिये तुझे पर में से सुख लेने की बुद्धि हुई। किन्तु भाई ! पर में से सुख लेने की बुद्धि के कारण तू अपने अखण्ड सुख के भंडार को भूल रहा है; अपने निधान को खोकर (भूलकर) तू दुःखी हो रहा है। पर में सुख है ही नहीं, चैतन्य में ही सुख है ह्न ऐसा समझकर निजस्वरूप में स्थिर एकाग्र रहना और पर की इच्छा का निरोध करना ह्न यही शांति है, यही तप है, यही निर्जरा है और यही मोक्ष का मार्ग है।

जीव-अजीव आदि तत्त्वों को अज्ञानी नहीं पहचानता; उसे ऐसी कल्पना होती है कि रुपये के बिना मैं मर जाऊँगा, शरीर के बिना मैं मर जाऊँगा, परन्तु हे जीव ! तुम

तो चैतन्य शक्ति से जीनेवाले हो; शरीरादि के संयोग से जीनेवाले नहीं हो। तुम तो उससे भिन्न हो और उसकी इच्छा के बिना ही जीनेवाले हो; अतः पर के बिना मैं जी नहीं सकूँगा ह्न ऐसी मिथ्याबुद्धि को छोड़ो। मिथ्याभाव से जीव का भावमरण होता है और वही दुःख है। अपने जीव को पराश्रित मानने की भूल जीव अनादि से कर रहा है और उसके फल में अनादि से दुःख भी भोग रहा है। अब उस भूल को छोड़कर सुखी होने के लिये यह उपदेश है कि उपयोगस्वरूप अपने शाश्वत-स्वाधीन जीव को पहचानो।

जीव ने अपने स्वरूप की सम्यक्श्रद्धा व सम्यग्ज्ञान के बिना, शुभरागरूप व्यवहारक्रिया और व्यवहार जानपना अनन्तबार किया, परन्तु वे सब मिथ्या हैं। जीव मिथ्यात्वपूर्वक जो भी भाव करता है, वे सब दुःखदायक ही हैं। एक दूसरी छहढाला जो कि श्री बुधजन पण्डितजी द्वारा रचित है, उसमें भी कहा है कि ह्न

सम्यक् सहज स्वभाव आपका अनुभव करना,
या बिन जप-तप व्यर्थ कष्ट के मांही पड़ना।
कोटि बात की बात अरे ! बुधजन उर धरना,
मनवचतन शुचि होय ग्रहो जिनवृष का शरना।।

करोड़ों बातों का यही सार है कि आत्मा के सहज स्वभाव का अनुभव करना; इसके बिना सब व्यर्थ है। जिनवृष कहो या वीतराग-विज्ञानरूप धर्म कहो ह्न वही जीव को शरणरूप है।

देखो ! समयसारादि बड़े-बड़े शास्त्रों में तो यह बात है ही, किन्तु पहले के विद्वानों के द्वारा रचित छहढाला जैसी छोटी पुस्तकों में भी यही बात की है। उन पण्डितों का कथन भी आचार्यों के अनुसार ही है, उसमें वीतराग-विज्ञान का ही प्रतिपादन है। चैतन्य का वीतराग-विज्ञान सुखरूप है और ऐसे वीतराग-विज्ञानरूप धर्म को साधकर के अनादिकाल से जीव मुक्त होते रहते हैं। वीतराग-विज्ञानवंत जीव जगत् में सदाकाल विद्यमान होते ही हैं, अतः मुक्ति के लिए तुम भी वीतराग-विज्ञानी बनो।

सभी जीव आनन्द चाहते हैं, वह आनन्द कहीं बाहर में नहीं है; आत्मा में ही है। अतः ज्ञानी कहते हैं कि हे जीव! अपने आत्मा में ही आनन्दित रह; सदैव उसकी ही प्रीति कर। आत्मज्ञान के बिना सब दुःखदायक ही है। सात तत्त्वों की सच्ची पहचान करने से उसमें आत्मा की पहचान आ जाती है। वह इसप्रकार ह्न

(१) **'जीवो उवओगलक्खणो णिच्चं'** ह्न जीव सदा उपयोग लक्षणरूप है, वह शरीरादि अजीव से भिन्न तत्त्व है।

(२) पुद्गलादि अजीवतत्त्व में ज्ञान नहीं है; यह जीव और अजीव दोनों के काम भिन्न-भिन्न अपने-अपने में है।

(३) मिथ्यात्वादि भाव आस्रव हैं, पुण्य-पाप दोनों ही आस्रव में समाते हैं। ये आस्रवभाव जीव को दुःखदायक हैं।

(४) सम्यग्दर्शनादि वीतरागभाव के द्वारा कर्म का संवर होता है। ये सम्यग्दर्शनादि भाव जीव को सुखरूप हैं और मोक्ष के कारण हैं।

(५) मिथ्यात्वादि भाव बंध के कारण हैं; शुभराग भी बंध के कारण हैं, व मोक्ष के कारण नहीं हैं।

(६) सम्यग्दर्शनपूर्वक शुद्धता से कर्मों की निर्जरा होती है।

(७) आत्मा की पूर्ण शुद्धता होने पर आकुलता का सर्वथा अभाव हो जाना और कर्मों के बंधन से आत्मा का मुक्त होना ही मोक्षतत्त्व है; वह पूर्ण सुखरूप है।

इसप्रकार सात तत्त्वों को पहचानकर उनमें से सम्यग्दर्शनादि सुख के कारणों का ग्रहण करना और दुःख के कारणरूप मिथ्यात्वादि का त्याग करना ह्न इसीलिये यह उपदेश है ह्न ऐसा यथार्थ तत्त्वश्रद्धान् सम्यग्दर्शन है और यही मोक्ष का मूल है।

अज्ञानी जीव बाहर की अनुकूलता से अपने को सुखी मानता है; परन्तु सम्यग्दर्शन के बिना वास्तव में वह दुःखी ही है। चींटी जब शक्कर खा रही हो, तब भी वह दुःखी है; मनुष्य मिष्ठान्न खा रहा हो; तब भी वह दुःखी है, स्वर्ग का मिथ्यादृष्टि देव अमृत का स्वाद लेता हो, उस वक्त भी दुःख का ही वेदन कर रहा है; परन्तु ये जीव भ्रम से अपने-अपने को सुखी मानते हैं। अरे भाई ! यह तो अशुभ इच्छा है, पाप है, आकुलता है, उसमें दुःख का ही वेदन है; मुख में जब मिष्ठान्न पड़ा हो तब भी जीव को रागस्वरूप दुःख का ही स्वाद आता है, मिष्ठान्न का नहीं। यह तो हुई अशुभ की बात और जब शुभपरिणाम हों, शुक्ललेश्या हो तब भी अज्ञानी जीव दुःखी ही है। जहाँ सुख भरा है, उस वस्तु को वह जानता भी नहीं है, तब उसे सुख कैसा? सुख तो आत्मा का स्वभाव है ह्न उसके अनुभव से मोक्षसुख होता है। मोक्ष में आकुलतारहित संपूर्ण सुख है, वहाँ किसी भी विषय की (अशुभ या शुभ) इच्छा नहीं है। **(क्रमशः)**

नियमसार प्रवचन

वर्तना का कारण काल

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की 33 वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। गाथा मूलत: इसप्रकार है ह्न

जीवादीदव्वाणं परिवट्टणकारणं हवे कालो।
धम्मादिचउण्हं णं सहावगुणपज्जया होंति ।।३३।।

जीवादि के परिणमन में यह काल द्रव्य निमित्त है।
धर्म आदि चार की निजभाव गुण पर्याय है।।३३।।

जीवादि द्रव्यों को परिवर्तन का कारण (वर्तना का निमित्त) काल है। धर्मादि चार द्रव्यों को स्वभावगुणपर्यायें होती हैं।

यह, कालादि शुद्ध अमूर्त अचेतन द्रव्यों के निज स्वभावगुणपर्यायों का कथन है।

मुख्य कालद्रव्य ह्न जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म और आकाश (पाँच अस्तिकाय) की पर्याय परिणति का हेतु होने से उसका लिंग परिवर्तन है अर्थात् कालद्रव्य का लक्षण वर्तनाहेतुत्व है।

काल नामक पदार्थ असंख्यात हैं। वे जीवादि पाँच द्रव्यों के परिणमन में निमित्त हैं, अत: कालद्रव्य का लक्षण वर्तना हेतुत्व कहा है। इससे विरुद्ध एक भी अप्रयोजनभूत बात सच्ची नहीं है। जो लोग कालद्रव्य को नहीं मानते, उनके देव-गुरु-शास्त्र और द्रव्य-गुण-पर्याय में बहुत गड़बड़ी है; अतः आचार्यदेव कालद्रव्य को सिद्ध करते हैं।

यह अन्य बात है कि धर्म, अधर्म, आकाश और काल को स्वजातीय अथवा विजातीय बंध का संबंध नहीं होने से उसमें विभावगुण पर्याय नहीं होती; अपितु स्वभावगुणपर्याय होती है। स्वभावगुणपर्याय का प्रतिपादन पूर्व में किया जा चुका है, उसे ही यहाँ संक्षेप में कहा गया है।

अब, गाथा ३३ की टीका पूर्ण करते हुए मुनिराज श्लोक कहते हैं।

(मालिनी)

इति विरचितमुच्चैर्द्रव्यषट्कस्य भास्वद्
विवरणमतिरम्यं भव्यकर्णामृतं यत्।
तदिह जिनमुनीनां दत्तचित्तप्रमोदं
भवति भवविमुक्त्यै सर्वदा भव्यजन्तो: ।।५०।।

(त्रिभंगी)

जय भव भय भंजन, मुनि मन रंजन, भव्यजनों को हितकारी।
यह षट्द्रव्यों का, विशद विवेचन, सबको हो मंगलकारी।।५०।।

इसप्रकार भव्यों के कर्णों को अमृत ह्न ऐसा जो छह द्रव्यों का अति रम्य दैदीप्यमान (स्पष्ट) विवरण विस्तार से किया गया। वह जिन मुनियों के चित्त को प्रमोद देनेवाला षट्द्रव्यविवरण भव्यजीवों को सर्वदा भवविमुक्ति का कारण हो।

त्रिलोकीनाथ तीर्थंकर देवाधिदेव ने छह द्रव्यों को देखकर प्रत्येक द्रव्य की स्वतंत्रता का विस्तार से विवरण किया। वह भव्यजीवों के कर्णों को अमृततुल्य लगा। जिसे चित्त में शंका-शंका और शंकाएँ ही भरी है, यहाँ उसकी बात नहीं; किन्तु लायक जीव को यह बात अमृततुल्य, महारमणीय, स्व-ज्ञान के वैभवस्वरूप लगती है। वह चित्त को आनन्द प्रदाती है और लायक जीव को मुक्ति का कारण है। यहाँ मुनियों की मुख्यता से बात कही है, किन्तु श्रावक-सम्यग्दृष्टि की बात गौणपने आ जाती है। जो भव्य जीव इन छह द्रव्यों को यथार्थ जानता है, उसे ये सदा मुक्ति का कारण होता है।

तीर्थंकरदेव की धर्मसभा में दिव्यध्वनि खिरती है, उसके माध्यम से जिन छह द्रव्यों का विवरण होता है, वह भव्यों को अमृततुल्य लगता है। वहाँ समवशरण में चार बाजु चार मानस्तंभ होते हैं। स्वर्ग में भी शाश्वत अकृत्रिम जिनमन्दिर होते हैं, वहाँ भी मानस्तंभ होते हैं। इन मानस्तंभों का शास्त्र में वर्णन आता है, यह सब धर्म का वैभव है; वैसे ही आत्मा ज्ञान वैभववाला है, वह भाव मानस्तम्भ है।

छह द्रव्यों का ज्ञान करनेरूप लक्षण जीवों को मुक्ति का कारण होता है ह्न ऐसा मुनिराज आशीर्वाद देते हैं। जो भव्य जीव आत्मा सहित छह द्रव्यों का ज्ञान और

प्रतीति करेंगे, वे संसार से मुक्त होंगे।

अब आगामी गाथा कहते हैं ह्न

एदे छद्दव्वाणि य कालं मोत्तूण अत्थिकाय त्ति।
णिद्दिट्ठा जिणसमये काया हु बहुप्पदेसत्तं।।३४।।

(हरिगीत)

बहुप्रदेशीपना ही है काय एवं काल बिन।
जीवादि अस्तिकाय हैं ह्न इस भांति जिनवर के वचन।।३४।।

काल छोड़कर इन छह द्रव्यों को (अर्थात् शेष पाँच द्रव्यों को) जिनसमय में (जिनदर्शन में) 'अस्तिकाय' कहा गया है। बहुप्रदेशीपना कायत्व है।

इस गाथा में कालद्रव्य के अतिरिक्त पूर्वोक्त द्रव्य ही पंचास्तिकाय हैं ह्न ऐसा कहा है।

यहाँ इस विश्व में काल द्वितीयादि प्रदेश रहित अर्थात् एक से अधिक प्रदेश रहित है, क्योंकि ''**समओ अप्पदेसो**/काल अप्रदेशी है'' ऐसा शास्त्र का वचन है। इसे द्रव्यत्व ही है; शेष पाँच को कायत्व (भी) है ही।

जो बहुप्रदेशों के समूहवाला हो, वह 'काय' है। 'काय' काय जैसे माने शरीर जैसे अर्थात् बहुप्रदेशोंवाले होते हैं। अस्तिकाय पाँच हैं।

अस्तित्व अर्थात् सत्ता। वह कैसी है ? महासत्ता और अवान्तरसत्ता ह्न ऐसी सप्रतिपक्ष[१] है। वहाँ, समस्त वस्तुविस्तार में व्याप्त होनेवाली महासत्ता है और प्रतिनियत[२] वस्तु में व्याप्त होनेवाली अवान्तरसत्ता है; समस्त व्यापकरूप में व्याप्त होनेवाली महासत्ता है, जबकि प्रतिनियत एक रूप में व्याप्त होनेवाली अवान्तरसत्ता है; अनन्त पर्यायों में व्याप्त होनेवाली महासत्ता है, जबकि प्रतिनियत एक पर्याय में व्याप्त होनेवाली अवान्तरसत्ता है। पदार्थ का 'अस्ति' ऐसा भाव वह अस्तित्व है।

इस अस्तित्व और कायत्व से सहित पाँच अस्तिकाय हैं। कालद्रव्य को अस्तित्व ही है, कायत्व नहीं है; क्योंकि काय की भाँति उसे बहुप्रदेशों का अभाव है। **(क्रमशः)**

१. सप्रतिपक्ष = प्रतिपक्ष सहित; विरोधी सहित। (महासत्ता और अवान्तरसत्ता परस्पर विरोधी हैं।)
२. प्रतिनियत = नियत; निश्चित; अमुक ही।

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : मुनि को आहार की वृत्ति उठने पर भी मुनिदशा रहती है तो फिर वस्त्र रखने की वृत्ति उठे तो उसमें क्या दोष है ?

उत्तर : मुनि को संयम के हेतु शरीर के निभाव के लिए आहार की वृत्ति उठती है और वस्त्र रखने का भाव तो शरीर से ममत्व का प्रतीक है; अत: वस्त्र रखने की वृत्ति रहते हुए मुनिदशा नहीं रहती।

प्रश्न : क्या द्रव्यलिंगी शुद्धात्मा का चिन्तवन नहीं करता ?

उत्तर : शुद्धात्मा का चिन्तवन तो करता है; परन्तु आत्ममय होकर नहीं करता- ऐसा जानना।

प्रश्न : द्रव्यलिंगी इतनी कठोर क्रियायें करता है, शास्त्राध्ययन भी गंभीर करता है; तथापि इन सबको स्थूल क्यों कहा ?

उत्तर : द्रव्यलिंगी क्षयोपशम की धारणा से और बाह्यत्याग से यह सब कुछ करता है। बाह्य में उसके वैराग्य भी विशेष दिखलाई पड़ता है। हजारों रानियाँ और महान वैभव-राजपाट भी उसने छोड़ दिया है, फिर भी उसका वैराग्य सच्चा नहीं है। पुण्य-पाप के परिणाम से अन्तरंग में विरक्ति उसके हुई नहीं है। स्वभाव महाप्रभु है, अनन्तानन्त गुणों का समुद्र आनन्द से परिपूर्ण है, उसकी महिमा अभी तक उसे अन्दर से नहीं आई।

प्रश्न : समयसार गाथा 3 में कहा है कि एक द्रव्य अन्य द्रव्य का स्पर्श नहीं करता। अत: जीव शरीर को तथा एक शरीर अन्य शरीर को स्पर्श नहीं करता। जीव भोजन नहीं कर सकता, बोल नहीं सकता, अन्य पदार्थों को चुरा नहीं सकता, धन-धान्यादि ग्रहण नहीं कर सकता तो मुनिराज हिंसादि पापों का त्याग क्यों करते हैं ?

उत्तर : एक द्रव्य अन्य द्रव्य को स्पर्श नहीं करता ह्न यह तो महा सिद्धान्त है, ऐसा ही वस्तुस्वरूप है। परद्रव्य की क्रिया से जीव को बन्ध होता ही नहीं; परन्तु परद्रव्य के लक्ष्य से होनेवाले रागादिभाव जीव को बन्ध के कारण होने से मुनिराज अपने हिंसादि पाप भावों का त्याग करते हैं, अत: पाप भावों के त्याग के निमित्तभूत बाह्य हिंसादि परद्रव्यों की क्रिया का त्याग किया- ऐसा उपचार से कहा जाता है।

प्रश्न : ज्ञान रहित वैराग्य तो रुँधा हुआ कषाय है ?

उत्तर : हाँ, आत्मा के ज्ञान-भान रहित कषाय की मन्दता के वैराग्यरूप परिणाम में कषाय दबा हुआ है, कषाय टला नहीं है। जब यह दबा हुआ-रुँधा हुआ कषाय प्रस्फुटित होगा, तभी नरक-निगोद में चला जायेगा। भले ही बाह्य में राजपाट-स्त्री-पुत्रादि छोड़े हों; तथापि आत्मभान बिना कषाय टलता नहीं, दबता है; और कालक्रम से प्रस्फुटित होकर तीव्रकषाय के रूप में प्रगट होता है।

प्रश्न : भावलिंगी मुनि का लक्षण क्या है ?

उत्तर : अन्तर्मुहूर्त में छठे-सातवें गुणस्थान में आता-जाता रहे, यही लक्षण भावलिंगी मुनि का है। छठे गुणस्थान में भी अन्दर शुद्धपरिणति रहती है, वही भावलिंगीपना है। मुनिदशा में तो आनन्द का प्रचुर स्वसंवेदन होता है। चतुर्थ-पंचम गुणस्थान में भी आनन्द का वेदन होता है; किन्तु अल्प होता है। जबकि भावलिंगी मुनि के प्रचुर होता है।

प्रश्न : भावलिंगी मुनि को छठे गुणस्थान में शुभभाव आता है। क्या वह भी मोक्षमार्ग है ? क्या उसे वह श्रेयस्कर-सुखकर लगता है ? यदि नहीं तो क्यों ?

उत्तर : भावलिंगी मुनि को छठे गुणस्थान में महाव्रतादि का शुभराग आता है-वह प्रमाद है, शास्त्र में उसे जगपंथ कहा है; वह मोक्षपंथ मोक्षमार्ग नहीं है। स्वरूप में ठहर जाना ही मुनिदशा है, उसमें से निकलकर शुभराग में आना मुनि को सुहाता नहीं है। जिसप्रकार चक्रवर्ती को अपने सुखदायी महल से बाहर आना रुचता नहीं है; उसीप्रकार चैतन्य महल में जो विश्रान्ति से बैठा है, उसे वहाँ से बाहर निकलना पसन्द नहीं आता। अशुभराग तो पापरूप जहर है ही, परन्तु शुभराग भी दु:खरूप बंधन है।

आत्मा अतीन्द्रिय ज्ञानानन्द की मूर्ति है, जिसे ऐसे निजस्वरूप की पहिचान हुई है, उसे फिर स्वरूप से बाहर निकलने की इच्छा नहीं होती। जिसकी 96 हजार रानियाँ, 96 करोड़ ग्राम और 16 हजार देव सेवा करने वाले हों ह्न ऐसे बाह्य वैभव में रहनेवाला चक्रवर्ती उस वैभव को मल के समान क्षणमात्र में त्यागकर आनन्द का उग्र स्वाद लेने के लिए वन में चला जाता है। इस अतीन्द्रिय आनन्द का उग्र-प्रचुर स्वाद लेनेवाले को शुभरागरूपी आकुलता में आना कठिन लगता है, भारस्वरूप लगता है; बाहर आना रुचता नहीं। उसे शास्त्र-रचना अथवा उपदेश देने का विकल्प आता तो है; परन्तु वह रंचमात्र भी उसे श्रेयस्कर नहीं मानता, हेय ही मानता है।

समाचार दर्शन ह्न

देश के कोने-कोने में संस्कार शिविरों की धूम

1. जबलपुर (म.प्र.) : श्री महावीरस्वामी दिगम्बर जैन मंदिर, बडा फुहारा, जबलपुर में श्री वीतराग-विज्ञान मण्डल एवं श्री वीतराग-विज्ञान पाठशाला द्वारा दिनांक 14 जून से 25 जून 2009 तक तृतीय बाल संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस धार्मिक शिक्षण शिविर में 6 वर्ष से 19 वर्ष की आयु के लगभग 200 प्रतिभागियों ने सम्मिलित होकर धार्मिक व नैतिक शिक्षा ग्रहण की।

इस शिविर में बच्चों को प्रतिदिन पूजन प्रशिक्षण, भक्तामर स्तोत्र एवं अहिंसा पाठमाला के माध्यम से अध्यापन कराया गया।

शिविर में पण्डित सुधीरकुमारजी शास्त्री अमरमऊ, पण्डित विशेषजी शास्त्री बडामलहरा एवं पण्डित श्रेयांसजी शास्त्री जबलपुर ने विविध वर्ग की कक्षाओं का संचालन किया।

अंतिम दिन परीक्षा लेकर पुरस्कार वितरित किये गये। सभी पुरस्कार मुख्यअतिथि के रूप में पधारे सहायक विक्रयकर आयुक्त श्री टी. के. वेद एवं उनकी माताजी श्रीमती रुक्मणी देवी द्वारा प्रदान किये गये। सभा की अध्यक्षता पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन ने की। अंत में मुमुक्षु मण्डल के अध्यक्ष श्री अशोककुमारजी जैन ने सभी का आभार व्यक्त किया।

2. खनियांधाना (म.प्र.) : श्री नंदीश्वर विद्यापीठ, चेतनबाग के तत्त्वावधान एवं श्री वज्रसेनजी जैन दिल्ली के आयोजकत्व में रविवार, दिनांक 14 जून से शनिवार, 20 जून 2009 तक श्री समयसार कलश मण्डल विधान एवं बाल संस्कार शिविर सम्पन्न हुआ।

शिविर में डॉ. उत्तमचंदजी जैन सिवनी, ब्र. सुमतप्रकाशजी जैन खनियांधाना, पण्डित शीतलजी नौगांव, पण्डित महेन्द्रकुमारजी शास्त्री इन्दौर, ब्र. अमितजी विदिशा, पण्डित सचिनजी अकलूज एवं स्थानीय शास्त्री विद्वानों का लाभ समाज को मिला।

शिविर में प्रात: डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी के तथा सायंकाल ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के ग्रन्थाधिराज समयसार पर मार्मिक प्रवचन हुये। इस अवसर पर बालिकाओं एवं महिलाओं की विशेष कक्षायें ब्र. नीलम बहन खनियांधाना ने ली।

इस अवसर पर वज्रसेन जैन, दीपक जैन दिल्ली की ओर से विद्यालय के समस्त विद्यार्थियों को स्कूल बैग तथा श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन के द्वारा टिफीन एवं कक्षा दसवीं एवं बारहवीं की परीक्षा में श्रेष्ठ रहे विद्यार्थियों को सम्मेद शिखरजी की वंदना के लिये नि:शुल्क ले जाने व वहाँ स्वर्ण पदक से सम्मानित करने की घोषणा की।

3. बैंगलोर (कर्ना.) : यहाँ दिनांक 3 मई से 10 मई 2009 तक कन्नड धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर ब्र. हेमन्तभाई गांधी के समयसार पर मार्मिक प्रवचन हुये तथा श्री आनंदकुमारजी जैन, श्रीमती धवलजी, पण्डित अनन्तराजजी शास्त्री मण्डया और स्थानीय विद्वान अनेकान्तजी शास्त्री, बैंगलोर के भी प्रवचन एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

आयोजन में 300 बच्चें व 150 श्रावक-श्राविकाओं ने शिविर का लाभ लिया। शिविर

संयोजक श्री टोडरमल महाविद्यालय जयपुर के स्नातक पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री एवं पण्डित अनन्तराजजी शास्त्री थे।

4. भोपाल : अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा चौक के तत्त्वावधान में दिनांक 31 मई से 8 जून तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर बाल ब्र. यशपालजी जैन जयपुर के दोनों समय 47 शक्तियों पर विशेष प्रवचनों का लाभ मिला। आपके अतिरिक्त पण्डित मनीषजी शास्त्री कहान जयपुर, पण्डित शशांकजी शास्त्री जयपुर, पण्डित किशनमलजी कोलारस, श्रीमती वर्षा जैन जयपुर एवं स्थानीय विद्वानों द्वारा बाल, शिशु एवं किशोर वर्ग की कक्षायें ली गईं।

शिविर के उद्घाटन के अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में म.प्र. फैडरेशन के प्रदेशाध्यक्ष श्री विजयजी बड़जात्या का सान्निध्य मिला।

अंतिम दिन परीक्षा लेकर विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया। इसी अवसर पर अखिल भारतीय जैन महिला फैडरेशन की शाखा का गठन भी किया गया। **ह्न अनिल जैन, अध्यक्ष**

5. उदयपुर : यहाँ दिनांक 28 मई से 5 जून 2009 तक श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान एवं शिविर का आयोजन श्री सुजानमलजी गदिया परिवार की ओर से किया गया।

इस अवसर पर पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा एवं पण्डित देवेन्द्रकुमारजी जैन बिजौलिया के समयसार पर प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही डॉ. योगेशजी जैन अलीगंज के प्रवचनसार के आधार से मुनि के स्वरूप पर मार्मिक प्रवचन हुये।

प्रतिदिन कार्यक्रम में आने-जाने के लिये उदयपुर शहर के आस-पास की कॉलोनियों से नि:शुल्क बसों की व्यवस्था थी।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित अश्विनजी शास्त्री, पण्डित अमोलजी एवं पण्डित सचिनजी शास्त्री बांसवाड़ा ने सम्पन्न कराये। विधान के प्रारंभ एवं अंतिम दिन श्री भागचन्दजी कालिका परिवार की ओर से सभी को मोक्षशास्त्र (तत्त्वार्थसूत्र) भेंट स्वरूप प्रदान किये गये।

6. परकोटा (सागर) : यहाँ श्री महावीर जिनालय में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में दिनांक 31 मई से 11 जून 2009 तक शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में प्रतिदिन सामूहिक पूजन, कक्षा, प्रवचन एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

इस कार्यक्रम में ब्र. नन्हेलालजी मोकलपुर, पण्डित शंशाकजी शास्त्री सागर, कु. वंदना जैन, कु. दीपाली जैन, कु. महिमा जैन आदि का सहयोग प्राप्त हुआ। ब्र. कल्पना बेन ने भी इस अवसर पर अपना अमूल्य समय देकर सभी को धर्मलाभ दिया।

अन्तिम दिन भव्य प्रभात फेरी निकाली गई, जिसमें बच्चों एवं बड़ों ने उत्साह से भाग लिया। रात्रि में सामूहिक भक्ति एवं सभी विद्यार्थियों को प्रोत्साहनार्थ पारितोषिक वितरित किये गये, जिसमें पण्डित निर्मलकुमारजी, श्री सुनीलकुमारजी सराफ, श्री संतोषकुमारजी नीमवाले, श्री अतुलजी सतभैया, श्री प्रशमजी भंडारी आदि उपस्थित थे।

फैडरेशन शाखा का पुनर्गठन

खड़ैरी (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 22 जून को श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन एवं महिला फैडरेशन की शाखा का पुनर्गठन किया गया, जिसमें सर्वसम्मति से डॉ. राजेश जैन को युवा फैडरेशन का एवं श्रीमती सरोज जैन को महिला फैडरेशन का अध्यक्ष चुना गया।

इसी समय अन्य पदाधिकारियों का भी विधिवत चुनाव किया गया। **ह्न मनोज शास्त्री**

श्रुत पंचमी पर्व सम्पन्न

खड़ैरी (म.प्र.) : यहाँ श्रुतपंचमी के अवसर पर आयोजित गोष्ठी में स्थानीय वयोवृद्ध विद्वानों, शास्त्री विद्वानों, मंगलार्थी विद्वानों एवं समाज के मुमुक्षुओं ने अपने विचार व्यक्त किये।

इस अवसर पर मुमुक्षु मण्डल के छोटे-बड़े 51 सदस्यों ने अपनी रुचि एवं योग्यतानुसार एक वर्ष के लिये किसी भी एक ग्रन्थ का आद्योपान्त स्वाध्याय करने का नियम लिया।

इसमें विशेषता यह रहेगी कि प्रत्येक साधर्मी अपने स्वाध्याय में आई विशेष बात को नोट करेंगे, जिसे प्रत्येक माह के अंतिम रविवार को युवा एवं महिला फैडरेशन के कार्यकर्ताओं द्वारा चैक किया जायेगा। जिसकी नोट बुक में स्वाध्याय के अनुसार विशेष बिन्दुओं का व्यवस्थित लेखन होगा, उसे पुरस्कृत किया जायेगा।

इसके लिये फैडरेशन सदस्यों ने सभी को नोट बुक उपलब्ध कराई। **ह्न मनीष कहान**

प्रतिमा विराजमान

उदयपुर (राज.) : यहाँ दिनांक 25 जून को दिगम्बर जैन मंदिर आदर्श नगर गायरियावास में 1008 भगवान आदिनाथ की अष्टधातु की प्रतिमा विराजमान की गई।

मंदिर के मंत्री श्री दीपचन्दजी गांधी ने बताया कि प्रतिमा भरतकुमार नरेशकुमार जैन बावलवाडा द्वारा भेंट की गई।

इस अवसर पर आयोजित शांतिविधान डॉ. महावीरप्रसादजी जैन, पण्डित खेमचन्दजी जैन एवं पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। विधान के पश्चात् शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें घोडे एवं बग्गियों पर आचार्य कुन्दकुन्द एवं गुरुदेवश्री के फोटो सहित धर्मध्वज एवं जिनवाणी लेकर श्री वाडीलाल जैन, श्री नेमीचन्दजी जैन परिवार कोटा एवं श्री टीकमचन्दजी लिखमावत परिवार चल रहा था। **ह्न दीपचन्द गांधी**

स्पष्टीकरण

समन्वयवाणी (पाक्षिक) के दिनांक 16 से 31 मई को प्रकाशित 10वें अंक में छपे लेख 'आत्मार्थियों के गढ में....का खेल' के विचारों से हम सहमत नहीं है एवं उससे हमारा कोई संबंध नहीं है। **ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल, महामंत्री - पं. टोडरमल स्मारक ट्रस्ट**

82 स्थानों पर एकसाथ बाल संस्कार ग्रुप शिविर

भिण्ड (म.प्र.) : श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन, श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट देवनगर भिण्ड एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा देवनगर भिण्ड के संयुक्त तत्त्वावधान में अन्तर्राष्ट्रीय मुमुक्षु महासंघ, देवलाली के विशेष सहयोग तथा बाल ब्र. पण्डित रविन्द्रजी अमायन एवं बाल ब्र. पण्डित सुमतप्रकाशजी खनियांधाना की प्रेरणा व मार्गदर्शन में पाँचवा सामूहिक बाल संस्कार शिक्षण शिविर एकसाथ 82 स्थानों पर दिनांक 31 मई से 11 जून 2009 तक सम्पन्न हुआ।

शिविर का उद्घाटन श्री ब्रजसेनजी दिल्ली एवं झण्डारोहण श्री वीरेन्द्रजी जैन रानीपुरवालों के करकमलों से हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री आलोकजी जैन कानपुर, श्री अरविन्दजी जैन भिण्ड व विशिष्ट अतिथि श्री जिनेन्द्रजी जैन मौ, श्री सुनीलजी जैन ग्वालियर, श्री दीपकजी जैन शहादरा आदि मंचासीन थे। इस अवसर पर किट का विमोचन श्री रतीभाई मुंबई ने किया।

शिविर में श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन मंगलायतन, श्री अकलंक शिक्षण संस्थान बांसवाडा, श्री नंदीश्वर विद्यापीठ खनियांधाना, श्री कुन्दकुन्द विद्या निकेतन सोनागिर आदि स्थानों के कुल 172 विद्वानों की टीम के द्वारा विभिन्न शहरों एवं गांव के बच्चों व श्रावक-श्राविकाओं को जैनधर्म के मुख्य बिन्दुओं के माध्यम से धार्मिक संस्कार दिये गये।

इस बृहद ज्ञान यज्ञ के अंतर्गत भिण्ड जिले के 16, ग्वालियर जिले के 9, मुरैना जिले के 2, शिवपुरी जिले के 10, ललितपुर जिले के 12, इटावा जिले के 9, फिरोजाबाद जिले के 9, मैनपुरी जिले के 4, सागर जिले के 3 तथा इन्दौर जिले के 8 ह्न इसप्रकार कुल 82 स्थानों पर शिविर का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। लगभग सभी स्थानों पर प्रतिदिन प्रात: पूजन, प्रवचन, बाल कक्षायें, जिनेन्द्र भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुये।

इस सामूहिक बाल संस्कार शिविर में ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित विनीतजी शास्त्री ग्वालियर, पण्डित नागेशजी जैन पिड़ावा, श्री सुरेशजी जैन अटेर रोड, श्री बुद्धसेन जैनभिण्ड, श्री नरेशजी जैन जसवंतनगर, श्री दीपक जैन एवं श्री विवेक जैन भिण्ड ने विभिन्न स्थानों पर जाकर शिविरों का निरीक्षण एवं व्यवस्थाओं का अवलोकन किया।

शिविर का भव्य समापन समारोह श्री सीमंधर जिनालय, देवनगर भिण्ड में दिनांक 11 जून 2009 को किया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री अशोककुमारजी जैन भिण्ड ने की। मुख्य अतिथि श्री पारसजी जैन-जिला मजिस्ट्रेट-भिण्ड, विशिष्ट अतिथि श्री ऐ. के. जैन-विद्युत मंडल भिण्ड, श्री गजेन्द्रजी जैन, श्री सतीशचंद्रजी जैन भिण्ड के अतिरिक्त सभी विद्वत्जन मंचासीन थे।

इसी समय विभिन्न कक्षाओं में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करनेवाले बालकों का श्री राजीवजी जैन शास्त्री भिण्ड द्वारा पुरस्कार देकर उत्साहवर्धन किया गया।

82 स्थानों पर लगे इस बृहद सामूहिक शिविर में लगभग 25 हजार साधर्मियों एवं बालक-बालिकाओं ने ज्ञानगंगा में स्नान किया। **ह्न डॉ. सुरेशचन्द जैन, भिण्ड**

अष्टान्हिका महापर्व सानन्द सम्पन्न

१. रतलाम (म.प्र.) : यहाँ श्री आदिनाथ दि. जैन चैत्यालय में अष्टान्हिका पर्व के अवसर पर प्रतिदिन प्रात: अभिषेक के पश्चात् रत्नत्रय मण्डल विधान की सामूहिक पूजन पण्डित कान्तिकुमारजी जैन इन्दौर द्वारा सम्पन्न कराई गई।

इस अवसर पर डॉ. उत्तमचंदजी जैन सिवनी के प्रात: समयसार पर एवं रात्रि में मोक्षमार्ग प्रकाशक पर रोचक व सरल शैली में व्याख्यानों से मुमुक्षु समाज लाभान्वित हुआ। व्याख्यान के पश्चात् पण्डित निशांत जैन ने जैन सिद्धान्त प्रवेशिका की कक्षा ली।

कार्यक्रमों में स्थानीय समाज के अतिरिक्त जावरा, खाचरोद, बड़नगर, इन्दौर, उदयपुर, वापी आदि स्थानों के श्रद्धालुओं ने भी धर्मलाभ लिया। **ह्न पदमचन्द अजमेरा**

२. दिल्ली : आत्म साधना केन्द्र में पर्व के अवसर पर श्री पंचमेरु नन्दीश्वर मण्डल विधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्यक्रम ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में पण्डित मधुवनजी शास्त्री मुजफ्फरनगर, पण्डित संदीपजी शास्त्री बासंवाडा एवं पण्डित प्रयंकजी शास्त्री रहली ने सम्पन्न कराये ।

इस प्रसंग पर पण्डित नरेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर, विदुषी राजकुमारीजी दिल्ली एवं पण्डित संजीवजी शास्त्री बारां के प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही आत्मार्थी कन्या विद्यानिकेतन की बालिकाओं द्वारा प्रवचन एवं कार्यक्रमों का संचालन भी किया गया। विधान के आमंत्रणकर्ता श्री रहतुमलजी नरेन्द्रजी जैन परिवार, दिल्ली थे।

३. कोटा (राज.) : श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल एवं जैन युवा फैडरेशन शाखा कोटा के तत्त्वावधान में कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय भवन, रामपुरा में अष्टान्हिका महापर्व पर ब्र. नन्हे भैया सागर का एवं श्री सीमंधर जिनालय, इन्द्रविहार में पण्डित मनोजजी जैन जबलपुर का मंगल सान्निध्य मिला। दोनों ही स्थानों पर प्रात: सामूहिक जिनेन्द्र पूजन व समयसार पर प्रवचन एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक के आधार से वैराग्यमयी प्रवचनों का लाभ मिला। श्री सीमंधर जिनालय इन्द्रविहार में पण्डित मनोजजी ने युवाओं को पूजन प्रशिक्षण एवं उसके बारे में प्रेरणा दी ।

४. भीण्डर (राज.) : यहाँ श्री पार्श्वनाथ दि. जैन चैत्यालय में स्थानीय समाज एवं जैन युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में तीन लोक मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

प्रतिदिन प्रात: अभिषेक, पूजन-विधान का कार्यक्रम होता था। दोपहर में मोक्षशास्त्र विषय पर महिला वर्ग की कक्षा पण्डित संदीपजी शास्त्री बडकुल ने ली। सायंकाल पण्डित संदीपजी बडकुल एवं पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री द्वारा दो कक्षायें ली गई। इस अवसर पर पण्डित अंकितजी शास्त्री लूणदा के क्रिया-परिणाम-अभिप्राय विषय पर प्रवचन हुये।

५. खतौली (उ.प्र.) : यहाँ भगीरथजी वर्णी द्वारा स्थापित श्री 1008 पद्मप्रभ दिगम्बर जिनमंदिर में पर्व के अवसर पर **श्री पंचमेरु नंदीश्वर विधान** पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री बक्स्वाहा एवं पण्डित दीपकजी जैन भिण्ड ने कराया। इस अवसर पर पण्डित कोमलचंदजी जैन द्रोणगिरी

के दोनों समय समयसार एवं मोक्षमार्ग प्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला।

विधान के मध्य अन्तिम पाँच दिन 108 श्री आचार्य भरतभूषणजी महाराज द्वारा आशीर्वचन का विशेष लाभ मिला। विधान के सम्पूर्ण कार्यक्रम स्थानीय विद्वान सोनूजी शास्त्री फिरोजाबाद के कुशल निर्देशन में सम्पन्न हुये।

६. खतौली (उ.प्र.) : श्री दिगम्बर जैन मन्दिर पीसनोपाड़ा में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा खतौली द्वारा **श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान** का आयोजन किया गया।

विधान में आठ दिनों तक आचार्य 108 श्री भरतभूषणजी महाराज द्वारा महती धर्म प्रभावना हुई। विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य जयपुर से पधारे पण्डित एकत्वजी शास्त्री खनियांधाना एवं पण्डित दीपेशजी शास्त्री ने सम्पन्न कराये। रात्रि में भक्ति एवं समयसार पर प्रवचन हुये।

७. अजमेर (राज.) : यहाँ श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्री सीमन्धर जिनालय में अष्टान्हिका महापर्व के पावन अवसर पर दिनांक 29 जून से 7 जुलाई तक 170 तीर्थंकर विधान का आयोजन रखा गया। इस अवसर पर पण्डित कमलचंदजी ने नियमसार के माध्यम से पंचरत्न की गाथाओं द्वारा जीव के स्वरूप का ज्ञान कराया।

विधान के समस्त कार्य पण्डित अश्विनजी नानावटी ने कराये। आयोजन में श्री मनोजजी कासलीवाल ट्रस्ट मंत्री व युवा प्रकोष्ठ आदि का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। **ह्न प्रकाश पाण्ड्या**

८. मुम्बई (म.प्र.) : प्रत्येक अष्टान्हिका पर्व की तरह इस बार भी आषाढ माह की अष्टान्हिका महापर्व पर दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल बृहन्मुम्बई द्वारा मुम्बई में विशिष्ट विद्वानों को आमंत्रित कर व्याख्यानो का आयोजन किया गया।

श्री सीमंधर जिनालय, जौहरी बाजार – पण्डित नीलेशभाई शाह मुम्बई, **दादर –** पण्डित कस्तूरचन्दजी भोपाल, **मलाड (ईस्ट) –** पण्डित गुलाबचन्दजी बीना, **मलाड (एवरशाईन नगर) –** पण्डित विपिनजी शास्त्री आगरावाले, **बोरीवली –** पण्डित सुदीपजी बीना, **भायंदर –** पण्डित जयकुमारजी बारां एवं **दहिसर –** पण्डित सौरभजी शास्त्री शहपूरावालों का स्थानीय समाज को लाभ मिला।

दशलक्षण पर्व के संदर्भ में

दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रवचनार्थ विद्वानों को बुलाने हेतु हमारे पास अनेक स्थानों से आमंत्रण-पत्र प्राप्त हो रहे हैं, जिन्होंने अभी तक आमंत्रण नहीं भेजा है, वे अपना आमंत्रण कृपया फैक्स या ई-मेल से शीघ्र भेजें।

दशलक्षण पर्व पर प्रवचनार्थ जाने वाले सभी विद्वानों को अपनी स्वीकृति भेजने हेतु पत्र भेजे गये थे, एतदर्थ जिन विद्वानों ने अभी तक अपनी स्वीकृति नहीं भेजी है, वे कृपया अपनी स्वीकृति शीघ्र भेजें। **ह्न मंत्री, टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर**

फैक्स : (0141) 2704127, E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com

जैन बाल संस्कार ग्रुप शिविर सम्पन्न

उदयपुर (राज.) : श्री कुन्दकुन्द कहान वीतराग-विज्ञान शिक्षण समिति, उदयपुर द्वारा 21 स्थानों पर जैन बाल संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन दिनांक 14 जून से 21 जून 2009 तक किया गया।

उदयपुर के श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालय मुमुक्षु मण्डल, प्रभात नगर-हिरणमगरी, केशवनगर, नेमिनाथ कॉलोनी-हिरणमगरी सेक्टर-3, आदर्श नगर-गायरियावास, हिरणमगरी सेक्टर-11 में एवं डबोक, वल्लभनगर, भीण्डर, कानोड, लूणदा, लकडवास, साकरोदा, कुराबड, जगत, सेमारी, चितौडगढ, डूंगरपुर में तीन स्थान ह्न इसप्रकार कुल 21 स्थानों पर शिविर लगाये गये। लगभग सभी स्थानों पर बाल कक्षाओं के अतिरिक्त युवा वर्ग की तत्त्वार्थसूत्र के प्रथम अध्याय एवं छहढाला की कक्षा ली गई। रात्रि में विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न कराए गये। सभी स्थानों पर अन्त में परीक्षाएं लेकर पुरस्कार वितरित किए गए।

शिविर में पण्डित खेमचंदजी, पण्डित रीतेशजी, पण्डित प्रक्षालजी, पण्डित जिनेन्द्रजी, पण्डित दीपकजी, पण्डित अमोलजी, पण्डित संदीपजी, पण्डित तपीशजी, पण्डित सनतजी, पण्डित गजेन्द्रजी, पण्डित जयेशजी, पण्डित सुमितजी, पण्डित अनेकान्तजी, पण्डित मेघवीरजी, पण्डित अतुलजी, पण्डित प्रीतमजी, पण्डित नीरजजी, पण्डित वीरेन्द्रजी, पण्डित रोहितजी, पण्डित जयदीपजी, पण्डित चेतनजी, पण्डित धवलजी, पण्डित शैलेशजी, पण्डित अभिषेकजी, पण्डित अर्पितजी आदि शास्त्री विद्वानों द्वारा प्रवचन एवं कक्षाओं के रूप में सहयोग मिला।

डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री एवं श्री कन्हैयालालजी दलावत ने स्थानों का निरीक्षण किया।

शिविर में कुल 547 छात्रों ने परीक्षाएं दी तथा 700 युवा व प्रौढ व्यक्तियों ने प्रवचन व कक्षा का लाभ लिया। सभी स्थानों के शिविरों की सफलता में श्री टोडरमल सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर एवं श्री अकलंक महाविद्यालय बांसवाडा के विद्यार्थियों का सहयोग रहा।

कार्यक्रम का सफलतम संचालन व संयोजक डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री, उदयपुर ने किया। **ह्न कन्हैयालाल दलावत**

19 वाँ शिविर सानन्द सम्पन्न

अजमेर (राज.) : यहाँ श्री सीमन्धर जिनालय में श्री वीतराग विज्ञान स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट, अजमेर के तत्त्वावधान में गत् 18 वर्षों से निरन्तर आयोजित ग्रीष्मकालीन बाल व युवा चेतना शिविर का 19 वाँ भव्य आयोजन 17 जून से 26 जून 2009 तक सानन्द सम्पन्न हुआ।

प्रतिदिन पूजन-विधान के मध्य स्थायी विद्वान पण्डित अश्विनजी नानावटी, बांसवाडा एवं पण्डित अंकितजी शास्त्री लूणदा द्वारा पूजन के संबंध में मार्मिक जानकारी दी जाती थी।

इन्हीं दोनों विद्वानों द्वारा प्रात: सामूहिक बाल कक्षा, बालबोध भाग 1, 2, 3 की कक्षा, सायं भक्ति, बाल कक्षा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इसी बीच पण्डित कमलचंदजी जैन पिड़ावा ने युवाओं के लिये मोक्षशास्त्र व मोक्षमार्ग प्रकाशक की कक्षा ली।

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन ह्न

राजस्थान प्रदेश का कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण सम्पन्न

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का राजस्थान प्रदेश का द्वितीय कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण सम्मेलन रविवार, दिनांक 12 जुलाई को अकलंक पब्लिक स्कूल, रामपुरा, कोटा में आयोजित किया गया।

प्रात: पूजन एवं प्रवचन के उपरान्त प्रशिक्षण का प्रथम सत्र प्रारंभ हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि फैडरेशन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री प्रेमचन्दजी बजाज थे। समारोह की अध्यक्षता राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय उदयपुर की हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. मंजू चतुर्वेदी ने की।

मुख्यवक्ता फैडरेशन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल के अतिरिक्त विशिष्ट अतिथि के रूप में मुमुक्षु मण्डल कोटा के अध्यक्ष श्री ज्ञानचन्दजी जैन, फैडरेशन के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री पीयूषजी शास्त्री जयपुर, प्रदेशाध्यक्ष डॉ. उत्तमचन्दजी भारिल्ल मुम्बई, प्रदेश महासचिव श्री राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, प्रांतीय उपाध्यक्ष पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर, डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित रतनजी शास्त्री कोटा एवं पण्डित संजीवजी गोधा जयपुर मंचासीन थे।

इस सत्र में मुख्यवक्ता के रूप में बोलते हुये फैडरेशन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने फैडरेशन की उपयोगिता एवं वर्तमान परिप्रेक्ष में फैडरेशन की प्रासंगिकता और उसकी आवश्यकता पर जोर दिया।

इस सत्र में उदयपुर जिले के कार्यकर्त्ताओं का परिचय डॉ. महावीरप्रसादजी जैन ने, अलवर संभाग के कार्यकर्ताओं का परिचय अलवर शाखा के अध्यक्ष श्री शशिभूषणजी जैन ने, जयपुर महानगर शाखा के कार्यकर्त्ताओं का परिचय अध्यक्ष श्री संजयजी सेठी ने, कोटा संभाग के कार्यकर्ताओं का परिचय संभागीय महामंत्री श्री जयकुमारजी बांरा ने एवं बांसवाडा का परिचय जिला प्रभारी श्री रीतेशजी जैन डडूका ने दिया।

कार्यक्रम के दौरान कोटा संभाग द्वारा तैयार किये गये दीपावली पर्व पर पटाखे नहीं फोडने की प्रेरणा देनेवाले पोस्टर का विमोचन श्री प्रेमचन्दजी बजाज एवं श्री ज्ञानचन्दजी जैन कोटा ने किया।

सभा का संचालन राज.प्रदेश प्रभारी श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर ने किया।

दोपहर में द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. उत्तमचन्दजी भारिल्ल ने की। विशिष्ट अतिथि श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई एवं श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर मंचासीन थे। मुख्य वक्ता फैडरेशन के राष्ट्रीय मंत्री श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने संगठन को मजबूत करने के लिये उपस्थित कार्यकत्ताओं के मध्य अपनी ओजस्वी शैली में संगठनोपयोगी मार्मिक सूत्र रखे। जिसे सभी कार्यकर्त्ताओं ने मनोयोग से सुना एवं उसके अनुसार अपने संगठन को चलाने के लिये दृढ संकल्प लिया।

इस सत्र में पण्डित राजेशजी शास्त्री जयपुर, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित रतनचन्दजी शास्त्री कोटा, श्री शशिभूषणजी अलवर एवं पण्डित रितेशजी शास्त्री बांसवाड़ा ने अपनी प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। संचालन प्रदेश महामंत्री पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाडा ने किया।

अन्त में सभी पदाधिकारियों ने अतिशय क्षेत्र केशवराय पाटन एवं मुमुक्षु आश्रम की यात्रा की। सभी को डॉ. भारिल्ल की हीरक जयन्ती वर्ष के अवसर पर घडी लगा हुआ उनका कटाउट भेंट दिया गया। कार्यक्रम का आयोजन युवा फैडरेशन कोटा संभाग ने किया। **ह्न विक्रान्त जैन कोटा**